प्राथमिक शिक्षक

वर्ष : 37 | अंक 1 | जनवरी 2013

इस अंक में

संवाद 3

लेख

1. कौतूहल पर पहरा — शारदा कुमारी — 5
2. स्केल–पैमाना कितना बेगाना — मो. उमर — 12
3. पाठ्येतर सामग्री और जेंडर का मुद्दा — लता पाण्डे — 20
4. जुबैदा हाज़िर हो — तिलक राज पंकज — 35
5. सरस्वती साइकिल योजना के मायने — युगल किशोर तिवारी — 38
6. तनाव प्रबंधन : कारण एवं सुझाव — रमेश कुमार, पूजा सिंह — 42
7. सशक्तीकरण के लिए शिक्षक प्रशिक्षण — प्रताप मल देवपुरा — 48
8. बालमन के चितेरे : मुंशी प्रेमचंद — स्नेहलता प्रसाद — 53

अनुभव

9. गाँव, सरकारी स्कूल और चकमक क्लब — सुनील बागवान — 57

पुस्तक के पन्नों से

10. शिक्षक हों तो — गिजुभाई बधेका — 62
    –गणित
    –गणित क्यों नहीं आई!

विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

परस्पर आवेष्टित हंस राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) के कार्य के तीनों पक्षों के एकीकरण के प्रतीक हैं– (i) अनुसंधान और विकास, (ii) प्रशिक्षण, तथा (iii) विस्तार। यह डिज़ाइन कर्नाटक राज्य के रायचूर ज़िले में मस्के के निकट हुई खुदाइयों से प्राप्त ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के अशोकयुगीन भग्नावशेष के आधार पर बनाया गया है।

उपर्युक्त आदर्श वाक्य *ईशावास्य उपनिषद्* से लिया गया है जिसका अर्थ है– विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

–मैं पढ़ता था तब, और बचु पढ़ता है तब
–कैसी कहानी न कहें

बालमन कुछ कहता है

11. मेरा विद्यालय — विवेक भारद्वाज — 69

12. मुझे टीवी देखना पसंद है — हर्ष द्विवेदी — 70

प्राथमिक शिक्षक पत्रिका के बारे में — 71

कविता

14. मेरे आँगन में — कामिनी भटनागर